

स्वर संधि के पाँच प्रकार होते हैं।

1) दीर्घ स्वर संधि — जब स्वजातीय स्वर के मेल से कोई विकार (परिवर्तन) होता है, तब वहाँ दीर्घस्वर संधि होता है
(अ के बाद अ या आ, इ के बाद इ या ई, उ के बाद उ या ऊ)

जइसे :- परिमार्थ — परम + अर्थ अ + अ = आ

सिवालय — सिव + आलय अ + आ = आ

परमानंद — परम + आनंद अ + आ = आ

गिरीस — गिरि + ईस इ + ई = ई

कपील — कपि + ईल इ + ई = ई

भानूदय — भानु + उदय उ + उ = ऊ

2) गुण स्वर संधि :- छत्तीसगढ़ी में हिन्दी के समान ही जब अ के बाद इ आए तो 'ए' व अ के बाद उ आने पर 'ओ' हो जाता है। यहाँ आने पर अर् हो जाता है।

जैसे :-

सुर + इा = सुरेश (अ + इ = ए)

महा + इश = महेश (आ + इ = ए)

सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र (अ + इ = ए)

लं + उदर = लंबोदर (अ + उ = ओ)

महा + उत्सव = महोत्सव (आ+उ = ओ)

देव + ऋषि = देवर्षि (आ + ऋ = अर्)

3) वृद्धि स्वर संधि :- जब 'अ' के बाद 'ए' व 'ओ' आए तो वह 'ए' व 'ओ' रूप में बदल जाता है।

हिन्दी से योग भिन्न छत्तीसगढ़ी भाषा में वृद्धि संधि में 'ऐ' व 'औ' का सामान्यतः प्रयोग नहीं होता है।

स्वर संधि पाँच प्रकार के होते हैं।

1) दीर्घ स्वर संधि :- जब एके जाति के स्वर आखर के मेल (जइसे अ के बाद अ/आ) होए ले सब्द म बदलाव होथे त उहाँ दीर्घ स्वर संधि होथे।

जइसे :- परमार्थ — परम + अर्थ अ + अ = आ

सिवालय — सिव + आलय अ + आ = आ

परमानंद — परम + आनंद अ + आ = आ

गिरीस — गिरि + इस इ + ई = ई

कपील — कपि + ईल इ + ई = ई

भानूदय — भानु + उदय उ + उ = ऊ

2) गुण स्वर संधि :- जब 'अ' के बाद 'इ' आय ले 'ए' अऊ 'अ' के बाद 'ऊ' के आय ले 'ओ' हो जाथे त उहाँ गुण स्वर संधि होथे।

जइसे :-

सुर + इस = सुरेस (अ + इ = ए)

महा + इस = महेश (आ+इ = ए)

सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र (अ + इ = ए)

लंब + उदर = लंबोदर (अ + उ = ओ)

3) वृद्धि स्वर संधि :- जब 'अ' के बाद म 'ए' अऊ 'ओ' आथे त ओहा 'ऐ' अऊ 'औ' म बदल जाथे।

हिन्दी ले थोरिक अलगेज छत्तीसगढ़ी भाखा म 'वृद्धि संधि' म 'ऐ' अऊ 'औ' के परयोग मिलथे।

जैसे :-

एक + एक = एकेक (अ + ए = ए)
वन + ओसधि = वन - ओसधि
महा + ओजस्वी = महा - ओजस्वी
सदा + ऐव = सदैव (आ + ए = ऐ)
महा + ओज = महा-ओज

4) यण स्वर संधि :- हिन्दी की तरह छत्तीसगढ़ी में इस संधि में 'इ' के बाद अ, आ ऊ तथा उ के बाद अ, आ आते हैं। परंतु इसमें अय, आव, आय आदि रूपों में परिवर्तन न होकर दोनों शब्दों को जोड़कर लिखा जाता है।

जैसे :-

अति + अधिक = अत्याधिक
देवी + आगम = देवीआगम
प्रति + उत्तर = प्रति - उत्तर
नदी + उद्गम = नदी - उद्गम
सु + आगत = सुआगत
भू + आदि = भूआदि
मातृ + इच्छा = मातृ - इच्छा

5) अयादि स्वर संधि :- 'ए' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'अय' 'ऐ' का 'आय', ओ का 'अव', और का 'आव' हो जाता है।

जैसे :-

ने + अन = नयन
भो + अन = भवन
गे + अक = गायक
पौ + अन = पवन
पौ + अक = पावक

जइसे :-

एक + एक = एकेक (अ + ए = ऐ)
वन + ओसधि = वन - ओसधि
महा + ओजस्वी = महा - ओजस्वी
सदा + ऐव = सदैव
(आ + ए = ऐ)
महा + ओज = महा - ओज

4) यण स्वर संधि :- हिन्दी असन छत्तीसगढ़ी म 'ऐ' संधि म 'इ' के बाद अ, आ, ऊ अऊ 'उ' के बाद 'अ' 'आ' आथे फेर एहा अय, आव, आय रूप म नइ बदल के जेव के तेव दूनों सबद ल जोड़ के लिखे जाथे।

जइसे :-

अति + अधिक = अति - अधिक
देवी + आगम = देवीआगम
प्रति + उत्तर = प्रति - उत्तर
नदी + उद्गम = नदी - उद्गम
सु + आगत = सुआगत
भू + आदि = भूआदि
मातृ + इच्छा = मातृ - इच्छा

5) अयादि स्वर संधि :- 'ए' के बाद कोई दूसर स्वर के आये ले 'ऐ' के 'अय' 'ऐ' के 'आय' 'औ' के 'आव' हो जाथे।

जइसे -

ने + अन = नयन
भो + अन = भवन
गे + अक = गायक
पौ + अक = पावक
पौ + अन = पवन

समास

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी								
<p>परिभाषा :- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नए शब्द बनाने की क्रिया को समास कहते हैं।</p> <p>जैसे - रसोईघर - रसोई का घर पुस्तकालय - पुस्तकों का घर</p>	<p>परिभाषा : दु या दु ले जादा सब्द के मिल ले नवा शब्द के बनना समास कहिलाथे। दुनों सब्द अलगेच सामासिक पद कहिलाथे अऊ समासिक पद ल समास ले अलगे करना समास विग्रह कहिलाथे।</p>								
<table border="1"><thead><tr><th>हिन्दी</th></tr></thead><tbody><tr><td>रसोईघर</td></tr><tr><td>धरमशाला</td></tr><tr><td>परबुधिया</td></tr></tbody></table>	हिन्दी	रसोईघर	धरमशाला	परबुधिया	<table border="1"><thead><tr><th>छत्तीसगढ़ी</th></tr></thead><tbody><tr><td>रंधनीघर</td></tr><tr><td>करमछड़का</td></tr><tr><td>परलोखिया</td></tr></tbody></table>	छत्तीसगढ़ी	रंधनीघर	करमछड़का	परलोखिया
हिन्दी									
रसोईघर									
धरमशाला									
परबुधिया									
छत्तीसगढ़ी									
रंधनीघर									
करमछड़का									
परलोखिया									
<p>समास विग्रह = समासिक पदों का समास से पृथक् करना समास विग्रह कहलाता है।</p> <p>उदाहरण : कुल बोरुक में दो पद हैं।</p> <p>1. कुल 2. बोरुक</p> <p>इसका विग्रह करने पर हम लिखेंगे 'कुल के बोरुक'</p> <p>समास के प्रकार :</p> <p>समास छः प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित है :-</p> <ol style="list-style-type: none">1. अव्ययीभाव समास2. तत्पुरुष समास3. कर्मधारय समास4. द्विगु समास5. बहुव्रीहि समास6. द्वंद समास	<p>जइसे : कुल-बोरुक म दू पद हवय</p> <p>1. कुल 2. बोरुक</p> <p>इकर विग्रह करें में हम लिखबो 'कुल के बोरुक'</p> <p>समास के प्रकार : समास छः प्रकार के होथय :-</p> <ol style="list-style-type: none">1. अव्ययीभाव समास2. तत्पुरुष समास3. कर्मधारय समास4. द्विगु समास5. बहुव्रीहि समास6. द्वंद समास								

1. **अव्ययी भाव समास** : छत्तीसगढ़ी में समास का प्रथम पद प्रधान होता है संपूर्ण पद विशेषण क्रिया विशेषण अव्यय की भाँति प्रयोग में आता है।

जैसे :

जल्दी-जल्दी
दिन के बाद दिन
बिना काम का
मन ही मन

2. **तत्पुरुष समास** : इस समास में उत्तर पद का पद प्रधान होता है तथा पूर्व पद गौण होता है। बीच - बीच में विभक्तियों का लोप होता है।

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
गुनहगरा	गुन ल नइ मनइया	गुण उपकरा को न मानने वाला
रोगहा	रोग में परे	रोग से ग्रसित
रंधनी कुरिया	रंधे के कुरियाँ	रसोई के लिए घर
मनखे बाहिर	मनखे ले बाहिर	मनुष्य से अलग
तुलसी चऊँरा	तुलसी के चऊँरा	तुलसी का चबूतरा
बइला-गाड़ी	बइला के गाड़ी	बैल का गाड़ी

3. **कर्मधारय समास** : इस समास का एक पद विशेषण व दूसरा पद विशेष्य होता है।

1. **अव्ययी भाव समास** : ए समास में पहिली पद ह परधान अउ अवयव होथे। अउ पद क्रिया विसेसन अवयव के रूप में उपयोग आथे।

जइसे :

लकर - लकर
दिने - दिन
बेकाम
मनेमन

2. **तत्पुरुष समास** : एक समास में दूसरइया पद परधान होथे अउ पहिली पद ह उकर सहायक। इकर बीच में विभक्ति चिनहा मन ह छिपे रहिथे।

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
गुनहगरा	गुन ल नइ मनइया	गुण को मानने वाला
रोगहा	रोग में परे	रोग से ग्रसित
रंधनी कुरिया	रंधे के कुरियाँ	रसोई के लिए कमरा
मनखे बाहिर	मनखे ले बाहिर	मनुष्य से अलग
तुलसी चऊँरा	तुलसी के चऊँरा	तुलसी का चबूतरा
बइला - गाड़ी	बइला के गाड़ी	बैल का गाड़ी

3. **कर्मधारय समास** : ए समास में एक पद ह विसेसन होथे जेन ह दूसर पद के विसेसता बताथय।

जैसे :

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
करिया बादर	करिया रंग के बादर	काला बादल
छितका कुरिया	छोट कुन कुरिया	छोटा कमरा
लमचोचवा	लंबा चौंच वाला	लंबे चौंच से युक्त
धवैरा-बइला	धवैरा रंग के बइला	सफेद बैल
बड़े - बहुरियाँ	बड़की बहु	बड़ी बहू
लम गोड़वा	लंबा गोड़ वाला	लंबा पैर वाला

4. द्विगु समास — इस समास का पहला पद संख्यात्मक होता है। साथ ही इससे समूह वाची भाव का बोध होता है।

जैसे :

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
सतबहिनी	सात इन बहिनी	सात बहन
चउमास	चार महीना के बेरा	चार माह का समय
चरगोड़िया	जेकर चार इन गोड़ हो	चार पैर वाला
पंचरंगा	पाँच ठन रंग वाला	पाँच रंगों से युक्त
तितरी	तीन बेटा के बाद बेटा	तीन पुत्र के बाद पुत्री
सतपुरखा	सात पुरखा	पूर्वजों की सात पीढ़ी

5. द्वंद समास :- इस समास का दोनों पद प्रधान होता है। इसमें भिन्न दो पदों का जोड़ा बनता है। उनके बीच अऊ यानी और आता है।

जइसे :-

करिया बादर	करिया रंग के बादर	काला बादल
छितका कुरिया	छोट कुन कुरिया	छोटा कमरा
लमचोचवा	लंबा चौंच वाला	लंबे चौंच से युक्त
धवैरा - बइला	धवैरा रंग के बइला	सफेद बैल
बड़े - बहुरियाँ	बड़की बहु	बड़ी बहू
लम गोड़वा	लंबा गोड़ वाला	लंबा पैर वाला

4. द्विगु समास : ए समास के पहिली पद संख्यावाची विसेसन होथे। एकरे संगे एमा समूहवाची भाव होथे।

जइसे :

सतबहिनी	सात इन बहिनी	सात बहन
चउमास	चार महीना के बेरा	चार माह का समय
चरगोड़िया	जेकर चार ठन गोड़ हो	चार पैर वाला
पंचरंगा	पाँच ठन रंग वाला	पाँच रंगों से युक्त
तितरी	तीन बेटा के बाद बेटा	तीन पुत्र के बाद पुत्री
सतपुरखा	सात पुरखा	पूर्वजों की सात पीढ़ी

5. द्वन्द्व समास :- ए समास के दुनो पद परधान होथे। जेमा अलगेच-अलगेच दू पद के जोड़ी बनथे अउ उकर बीच म अउ, नइते, जइसन जोड़इया शब्द छिपे रइथे।

जैसे :- 'नइते' जैसे योजक शब्द का लोप होता है।

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
दाई - ददा	दाई अऊ ददा	माता और पिता
डारा - पाना	डारा अऊ पाना	डाल और पत्ती
घर - दुवार	घर अऊ दुवार	घर और दरवाजा

6. **बहुब्रीही समास** : इस समास में दोनों पद प्रधान न होकर तीसरे व्यक्ति या पदार्थ की ओर संकेत करते हैं।

जैसे :-

- मुरलीधर (मुरली धारण करथे जे अर्थात् सिरी किसन)
- तिरलोकी (तीन लोक के स्वामी जेन अर्थात् सिरी बिस्नु)
- दस मुड़ (दस मुड़ी वाला जे) रावण
- दुख-हरण (दुख हरने वाला जेन) (भगवान)
- माटीपुत्र (माटी के सेवा करथे जेन) (किसान)
- तिरलोचन (तीन ठन आँखी हे जेकर) (शंकर)

जइसे :-

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
दाई - ददा	दाई अऊ ददा	माता और पिता
डारा - पाना	डारा अऊ पाना	डाल और पत्ती
घर - दुवार	घर अऊ दुवार	घर और द्वार

6. **बहुब्रीहि समास** : ए समास म दूनों पद परधान नइ होके कोनो तीसर के बारे म बताथय।

जैइसे:-

- मुरलीधर (मुरली धारण करथे अर्थात् सिरी किसन)
- तिरलोकी (तीन लोक के स्वामी जेन अर्थात् सिरी बिस्नु)
- मुड़ (दस मुड़ी वाला जे) रावण
- दुख-हरण (दुख हरने वाला जे (भगवान)
- माटीपुत्र (माटी के सेवा करथे जेन) (किसान)
- तिरलोचन (तीन ठन आँखी हे जेकर) (शिवशंकर)

अनेकार्थ शब्द

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
जिन शब्दों का एक से अनेक अर्थ स्थान, प्रयोग, समय, प्रसंग के अनुसार होता है, उसे अनेकार्थक शब्द कहा जाता है। कुछ प्रचलित शब्द इस प्रकार हैं -	जेन सब्द के एक ले जादा अर्थ जघा, बोले मं, समे के मुताबिक अलगेच हो जाथे ओला अनकार्थक सब्द केहे जाथे। जादा बोले जवइया सब्द अइसन हे :-
अँकुस	निगरानी (नियंत्रण)। रोका (रोक)। हाँथी ला बस मा राखे बर लोहा के नौकदार छँड़ (हाथी को बश में करने के लिए लोहे की नुकीली छड़)
अँखफट्टी	ईरखा (ईष्वा) कनवी (कानी)। नीयत डोलइया माइलोगिन (नीयतखोरी करने वाली)।
अँटियाना	अँइठना (ऐँठना)। गुमान करना (घमंड करना)। अँगरई लेना (अँगड़ाई लेना)।
अंडबंड	बड़बड़ई (व्यर्थ प्रलाप)। गारी -गल्ला (गाली-गलौच)। टेरगा-पेचका (टेढ़ा-मेढ़ा)।
अड़ानी	अटकाए बर टेकाथे तउन जिनिस (अटकाव के लिए प्रयुक्त वस्तु)। कुस्ती के एक दौंव (मल्ल युद्ध का एक दौंव)। अगियानी (अज्ञानी)।
अदर-कचर	बिन सुवाद के (स्वादहीन)। अधचुरहा (अधपका)। जतर-कतर (अस्त-व्यस्त)।
अपसोसी	सुवारथी (स्वार्थी)। पेटमाँहदुर (अधिक खाने वाला)। कोनो जिनिस ला जादा ले जादा धरे के उदिम करइया (किसी वस्तु को अधिक से अधिक प्राप्त करने का प्रयास करने वाला)।
अभरना	संघरना (मिलना) मुलाकात करना या होना (भेंट होना)। छुआना (स्पर्श होना)। गड़ना (चुभना)।

अमर	अमरित (अमृत)। धर (पकड़)। छुए के भाव (स्पर्श)। पहुँच (यथावत)
अरझना	फसड़ना (फँसना) लटकना (यथावत) गुरमेटाना (उलझना)। अटकना (यथावत)।
अलकर	दुखदई (कष्ट दायक)। साँकुर जगा (संकीर्ण जगह)। तन के ओ भाग जउन ला देखाय नइ जा सके (गुप्तांग)।
आरा	लकड़ी चीरे बर लोहा के दाँतादार पट्टी (लकड़ी चीरने के लिए लोहे की दाँता वाली पट्टी)। बइला गाड़ा के चक्का मा लगे ठाढ़ लकड़ी। (बैलगाड़ी के पहिये में लगी खड़ी लकड़ी)। पानी बोहाय के रद्दा (जल प्रवाह मार्ग)।
उठाना	ठाड़ करना (खड़ा करना) उचाना (जगाना)। बोझा उचाना (भार वहन करना) बढ़ाना (उन्नत करना)।
उसनइया	जरइया (जरने वाला)। जरवइया (जलाने वाला)। भूँजइया (भूनने वाला) उसनइया (उबालने वाला)। उसनवइया (उबालने वाला)।
उसलइया	उचइया (उठने वाला)। उचवइया (उठाने वाला)। उखनइया (उखाड़ने वाला)। हटवइया (हटाने वाला)। हटइया (हटने वाला)।
ऐँठना	अँइठाना (मुड़ जाना) ठगा जाना (यथावत)।
ओरियाना	ओरी-ओरी करना (क्रमबद्ध करना)। गाँजना (थप्पी करना)। विगराना (फैलाना)। बीते बात ला दुहराना (बीती बातों को प्रस्तुत करना)।
ओसरी	घर के परबित जगा (घर का पवित्र स्थान) घर के परमुख जगा (घर का मुख्य भाग)। पारी (पाली)।
कड़कना	कड़-कड़ के आवाज करना (कड़-कड़ की आवाज करना)। तेल, घीव आदि के तीपना (तेल, घी आदि का तपना)। तेल मा लसुन, जीरा आदि ला भूँजना (तेल में लहसुन, जीरे आदि का भुनना)। रोहिना मारना (विजली चमकना)।
कढ़इया	कड़ाही (छोटी कड़ाही)। गियान ला बुता-बेवहार मा उपयोग करइया (ज्ञान को प्रकट करने वाला)।
कलगी	पागा मा लगाए फूल के गुच्छा (पगड़ी में लगाय जाने वाला पुष्प-गुच्छ)। मंजूर नइते कुकरा के मुँड़ी के मुकुट (मोर या मुर्गे के सिर की चोटी)। चूँदी मा लगाए, जाथे तउन कंधी (बाल में लगाया जाने वाला कंधा)।
कसाना	खाए के जिनिश हा करुवा जाना (भोज्य पदार्थ में कसैलापन आना)। खींचा जाना (खींच जाना)। सोचे - बिचारे के नइते अनभो के मुताबिक बुता करे के गुन आना (गंभीरता या अनुभव - शीलता आना)।

कहिना	समझाइस (यथावत)। उपदेस (उपदेश)। बोल (कथन)।
काठी	घोड़ा के पीठ मा मड़ाथे तउन आसनी (घोड़े की पीठ पर रखने की जीन)। तन के ठाठा (शरीर का ढाँचा)। मुरदा लेगे खातिर बाँस के बनाए खटोला (शव ले जाने के लिए बाँस का बना ठाठ)। माटी दे बर जाए के बुता (मृतककर्म)।
कुसी	गेहूँ जौ आदि के फोकला (गेहूँ जौ आदि का छिलका)। पँड़री-भूरी रंग के (सफेद - भूरे रंग की 'गाय, बिल्ली')। नान-नान आँखी वाली (छोटी-छोटी आँखों वाली)।
खरोना	ओहाँ धोए खातिर पानी तिपोना (कपड़ा धोने के लिए पानी गरम करना)। सक्खार करना (अधिक नमकीन करना)। घीव नइते तेल ला जरो डारना (घी या तेल को जला डालना)।
खिरना	नानचुन होना (छोटा होना)। गवाँ जाना (गुमजाना)। नँदा जाना (प्रचलन समाप्त होना)। घीसा जाना (घीस जाना)
गचकाना	झंझेटना (हिचकोलना)। मरई-धमकई करना (प्रताड़ित करना)।
गजरा	गाजा (झाग)। फूल के गोप्फा (पुष्प-गुच्छ)। ढोल के डेरी ताल (ढोलक की बाईं ताल)। ताल के कोर मा लगे चमड़ा के गोल पट्टी (ताल पर लगी किनारे वाली चमड़े की गोल पट्टी)। साबुन के झाग (साबुन का झाग/फेन)
गाज	बिपत (विपत्ति) बाफुर (झाग)। पानी भीतरी के एक पउधा (एक जलीय पौधा)।
गुम्जा	कलेचुप रहइया (शांत रहने वाला)। अलाल (आलसी)। मिझरल (मिश्रित)।
चढ़ाव	बिहाव बखत दूलहा डाहर ले भेजे गहना, ओनहाँ अउ आने सिंगार के जिनिस (विवाह के समय वर पक्ष से भेजे जाने वाले आभूषण, वस्त्र एवं अन्य श्रृंगारिक वस्तुएँ)। ऊँच भुइयाँ (ऊँची भूमि)। कोनो जिनिस के किम्मत नइते नदिया के पानी बढ़ई (किसी वस्तु के मूल्य में अथवा नदी के जल में वृद्धि)। देवी-देवता मन ला चढ़ाए जाथे तउन जिनिस (देवी-देवताओं को अर्पित की जाने वाली वस्तु)।
चपकना	मसकना (दबाना)। लुकाना (छिपाना)। चटकना (चिपकना)।
चरकना	गुँसियाना (गुस्सा होना)। कुड़कना (चिढ़ना)। टूटना (यथावत)। दर्रा फाटना (दरार पड़ना)।
चराना	दर्रा फाटना (दरार पड़ना) चिरा जाना (फट जाना)। घाम चरचराना (तेज धूप लगना)। मार परे ले दरद होना (चोट लगने से दर्द होना)।

चलाना	निभाव करना (निभाना)। उपयोग करना (व्यवहत करना)। चालू करना (यथावत)। मुरुख बनाना (बेवकूफ बनाना)। रोपा लगाना (रोपाई करना)। चन्नी चलवाना (चलनी कराना)।
चापा	पुरुत (तह)। साँकुर (संकीर्ण)। चपाट (चिपका हुआ)। चिपचिपहा (चपचपा)। लट बँधाए (लटा हुआ)। काँटा के ढेरी (काँटों का ढेर)।
चुरना	पछताना (यथावत)। जेवन चुरना (भोजन का पकना)। बिपत ला सहना (विपत्ति झेलना)। नंगत के मिहिनत करना (कठोर परिश्रम करना)।
चूरा	हाँत के एक गहना (हाथ में पहनने का कड़ा)। कोनो जिनिस मा लगाए खातिर लोहा आदि ले बने चूरी (किसी वस्तु में लगाने के लिए लोहे आदि की बनी गोल पट्टी)। साँकुर (सकरा)। नानकुन (छोटा)। भूरका (चूर्ण)।
चोभा	काँटा (यथावत)। पीकी (अंकुरण)। चोभी (ढूँठ)।
छनकना	डर्रा के भागना (विदकना)। भुरका के उड़ियाना (चूर्ण का उड़ना)। पानी गिरना, नइते कोनो जिनिस के कड़ा वस्तु मा टकराए ले बारिक – बारिक कन मा बँट के छिटकना (गिरते हुए पानी या किसी अन्य तरल पदार्थ का कठोर जिनिस से टकराकर छोटे-छोटे कणों में विभक्त होकर बिखरना)। बरखा के फुहार परना (वर्षा की फुहारें पड़ना)।
छराना	मार खाना (यथावत)। छरा जाना (क्षतिग्रस्त होना)। नान-नान कुटका होना (टुकड़ों में विभक्त होना)। कुटाना (यथावत)।
जनाना	तिरिया (स्त्री)। याद देवाना (स्मरण कराना)। अनभो कराना (अनुभव करना)। बताना (यथावत)।
जिपरहा	गोठ-गोठ मा कीरिया खवइया (बात-बात में सौगंध खाने वाला)। कीरा खवइया (कीट-भक्षी)। सूम (कृपण)। जिद्दी (हठी)।
जोरना	जोड़ना (जोड़ना)। सकेलना (संचित करना)। डरना (भरना)। भेंट कराना मिलाना या आमने-सामने करना।
झार	बिख (विष) पेंड़ (पेड़)। खूब गमकना (तीखी गंध करना)। गुँस्सा (गुस्सा)।
झोइला	अंगार वाले कोइला (जलता हुआ कोयला)। झोलंगा (ढीला-ढाला)। कोचरहा (कुंचित)।
झोरहा	रसहा (रसीला)। झोलंगा (ढीला-ढाला)। पसरल (फैला हुआ)।

ठसना	मोल-भाव होना (सौदा तय होना)। जोम देना (भीड़ना)। ठेस लागना (टकराना)।
दुरा	दूरु (अंकुरित न हो पाने वाला बीज)। झुक्खा (शुष्क)। टाँठ (कड़ा)। बंठा (बौना)।
डँटना	चिपकना (सटना)। भीड़ना (प्रवृत्त होना)। सकलाना (एकत्रित होना)।
डोलना	हालना (हिलना)। बात ले हटना (वचन बद्ध न रहना)। गलती होना (गलत होना)। सुध बिसराना (भूल होना)।
ढारना	उलदना (ढालना)। गिराना (यथावत)। थिराना (विश्राम करना)।
ढोकरना	लकर-लकर पीना (जल्दी-जल्दी पीना)। घेरी-बेरी गोहराना (बार-बार अनुनय करना)। अथक होना (असमर्थ होना)। मँड़िया के पाँव परना (घुटने के बल बैठकर प्रणाम करना)।
ढोढ़िहा	पानी के रहइया एक ठन साँप (पानी में रहने वाला एक सर्प)। साँप के अकार मा एक परकार के करधन (सर्प के जैसा दिखने वाला एक प्रकार का कटिबंध)। कोनो पीये के जिनिस ला बिक्कट के पियइया (किसी पेय पदार्थ को अधिक पीने वाला)।
तनना	अँटियाना (अकड़ना) बल बाँधना (हिम्मत करना)। झिंकाना (खिंचवाना)। बाढ़ना (फैलना)।
ताव	गुँस्सा (क्रोध)। रोस (जोश)। गुमान (अहंकार)। आँच (ताप)।
दररना	लस खाना (पस्त होना)। थकना (यथावत)। ओनहाँ आदि के चिराना (कपड़ा आदि का फटना)।
धँसना	खुसरना (गढ़ना)। गोभाना (चुभाना)। फसड़ना (फँसना)।
धनी	गोसइयाँ (पति)। मालिक (स्वामी)। धनमान (धनवान)।
धमकना	मुँड़ पिराना (सिर दर्द होना)। आना (यथावत)। जाना (यथावत)।

नजराना	टोनहाना (जादू-टोना करना)। अँखियांना (नेत्र से संकेत करना)।
निमगा	जुच्छा (खाली)। आरुग (शुद्ध)। सिरिफ (सिर्फ)।
नेतना	आँकना (अनुमान लगाना)। बुता नेमना (कार्य सौंपना)। भँउरा मा नेती लपेटना (भौंरे में रस्सी लपेटना)। मकान-मा छान्हीं छाए खातिर भदरी पीटना (मकान में खप्पर छाने के लिए लकड़ी का ढाँचा तैयार करना)।
पकलाना	पाक जाना (पक जाना)। पिँउराना (पीला पड़ जाना)। बिमारी के सेती झिटक जाना (बिमारी से कमजोर हो जाना)।
पटिया	खटिया-पाटी (खाट की पाटी)। बाजवट (तखत)। छान्हीं के बीचों-बीच एक लम्बा अउ मोटठा लकड़ी जउन हा कड़ी जइसे काम करथे (छप्पर के नीचे की एक लंबी एवं मोटी लकड़ी जो कड़ी के जैसा काम करती है)।
पटियाना	इंतकाल होना (मर जाना)। सुत जाना (सो जाना)। अल्लर पर जाना (शिथिल पड़ जाना)। पाटी पारना (कंधी करना)।
पठवाना	भेजवाना (भेजवाना) चिक्कन हो जाना (चिकना हो जाना) काई रच जाना (काई जम जाना)।
परपराना	जीभ का जलन होना (जीभ में जलन होना)। जाड़ के सेती चमड़ी मा झुरी आना (ठंड के कारण त्वचा में खिंचवा होना)। पेड़-पउधा ऊ मा नंगतेहे फर धरना (पेड़-पौधे आदि में अधिक फल लगना)। पेड़ ले फर मन के नंगतेहे झरना (वृक्ष से फलों का अधिक मात्रा में झड़ना)।
पाना	पतई (पत्ता)। पना (यपना)। कोरा मा पाना (गोद में लेना)। मिलना (प्राप्त करना)।
पार	जात बिसेस के खंझा (जाति विशेष का टुकड़ा)। नदिया-नरवा के कोर (नदी-नाले का कूल)। कुआँ के पार (कुएँ की जगत)। गम नइते हिआव (पता या जानकारी)।
पेलना	मछरी पकड़े के तीनकोनियाँ झोलनी (मछली पकड़ने का एक त्रिकोना जाल)। मछरी पकड़े बर पानी मा झोल्ली डारना (मछली पकड़ने के लिए पानी में जाल डालना)। धकियाना (धक्का देना) अपनेच बात ला मनवाना (अपनी ही बातों को मनवाना)।
पोक्खाना	फर मा बीजा के पोक्खो होना (फल्ली में दाने का पुष्ट होना)। कोनो जिनिस के उपयोग नइते जादा होए ले अघा जाना (किसी वस्तु के उपयोग या अधिकता से तृप्त होना)। धनवंता होना (धनवान होना)।
पोट्ट	मजबूत (यथावत) पोक्खा दाना वाला (पुष्ट दानों वाला)।

पर्यायवाची

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
जिन 'शब्दों' के अर्थ में समानता हो उन्हें 'पर्यायवाची' शब्द कहते हैं। पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग आवश्यकता, सुविधा एवम् प्रसंग के अनुसार किया जाता है।	जेन 'सब्द' मन के अरथ एके बरोबर नइते एके जइसे होथे ओला 'पर्यायवाची' शब्द केहे जाथे। पर्यायवाची सब्द ल जरूरत, सुभिता, प्रसंग देख के बोले अऊ लिखे जाथे।
पाट	पठेरा, आरा, फूला, घनौची
जादू	नजरडीठ, कसरहा, कारुनारू, करंज
झुकना	निहरना, लीदर, लोर, नव, लहस
जिद्दी	घेख्खर, अप्पत, अरदली,
धूल	धुरा, गरदा, फुतकी, भांस, कुधरी, कुधरील,
ठोंस	टांठ, उमठ, पट्ठल, किचरा, कड़ा, ठाहिल, ठोंसहा, ठोंसलग, मट्ठर, पोट्ठ,
रास्ता	रद्दा, धरसा, रावन, डाहर
शरारती	उतलईन, अलवईन, उपई,
अति	लाहो, उतलंग, अतलंग, तपना
सबेरा	बिहनिया, मुंदरहा, पहट, फजर, भिनसरहा, सुरुजउत्ती, बेरा
समय	फाटत, कुकरा बासत, मउहा झरत
	समे, जुवार, बेरा, पईत्त, कून, बखत

दल	झोरफा, दर्हरा, गोप्फा, झोथ्था, गोहड़ी, टेन, डोमहा, खाप, खेमा, पार
कमजोर	कमसल, मरहा, हिनहर, लुदरा, अल्लर, लरबा, डगडग ले,
नष्ट	खुआर, मुड़ियामेट, खइता, गउदन, नास
कामचोर	अलाल, डायल, कोढ़िया, ओतिहा
अशिक्षित	अदरा, थेथला, अड़हा, अप्पड़
बाधा	रोका, छेका, आड़, अडंगा, बेंझा, बिलकोर, भेंगराजी
छिद्र	टोड़कू, भोड़ू, बेधा, भोंगरा, साँसी
बातुनी	चटरहा, लपरहा, चटघउला, छेरिया, गोटकाहरा, पटरा, अनदेखना, जलनहा
ईर्ष्यालू	कयरहा, खटकायर, खैराहा, खंडटाहा, जलकुकरा
उन्नति	बाढ़, बरकत, बिकास, पोक्खाना, बढ़त, बढ़ोत्तरी, पनकवा, रउती, पनकती, जामंती, बढ़ती
अकेला	अकेल्ला, एकसरुवा, एकलौता
अमीर	बड़े आदमी, धन्नासेठ, धनवान, चीजवाला, दाऊ, गौंटीया, मंडल
गंदा	अद्दर, असाद, मईलाहा, अद्दर, कचरा
खट्टा	अम्मठ, अमसूर, चुरुक,
मीठा	गुरतुर, मीठ, नीक, गुरहा
गरम	तात, तीप, ओकला

टूकड़ा

पुराना

नरम

पुस्तक

टूसा, चानी, कुटका

जुन्ना, खिनहा, दिन्नी, पुरखौती

सेवर, सेवरी, कोरमुहा, केंवची, कोंवर, डोहर

किताब, पोथी

अनेक शब्दों के लिए शब्द

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
कभी-कभी किसी घटना, विचार व भाव को गंभीरता एवम् स्पष्ट रूप से प्रकट करने के लिए एक शब्द सदा बोला जाता है। वहाँ पर एक सामाजिक शब्द का उपयोग किया जाता है। इससे कम शब्दों में ज्यादा बातें कह दी जाती है।	कभु-कभु कोनो घटना विचार नइ ते भाव ल गंभीर अऊ बरिया के परगट करे बर एक सब्द बोले जाथे। ओमेर एक सामाजिक सब्द के उपयोग करे जाथे। येकर ले काम सब्द मं जादा असरके बात कहे जाथे।
अँकुस	— निरापानी (नियंत्रण)। रोका (रोक)। हाँथी ला बस मा राखे बर लोहा के नाकदार छड़ (हाथी को वश में करने के लिए लोहे की नुकीली छड़)।
अँखफुट्टी	— ईरखा (ईर्ष्या)। कनवी (कानी)। नीयत डोलइया माइलोगिन (नीयतखोरी करने वाली)।
अँटाना	— कमती होना (घटना)। अईठ चघना (ऐँठन चढ़ना)। उरक जाना (समाप्त होना)। झुक्खा होना (खाली होना)।
अँटियाना	— अँइठना (ऐँठना)। गुमान करना (घमंड करना)। अँगरई लेना (अँगड़ाई लेना)।